M.A - I SEMESTER - CC- III

अर्धमागधी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई - 4 प्रकीर्णक

Q-I. प्रकीर्णक ग्रन्थो कितने है उसके ग्रन्थो की विवेचना करे?

Ans:— प्रकीर्णक ग्रन्थो की रचना के सम्बन्ध मे आगम ग्रन्थों के टीकाकारो का अभिमत है कि तीर्थंकरों द्वारा दिये गये उपदेश के आधार पर अनेक मुनियों द्वारा जिन ग्रन्थों की रचना की गयी है वे प्रकीर्णक है

प्रकीर्ण ग्रन्थों की संख्या दस है। जो इस प्रकार के है।

(1) चउसरण (चतुःशरण) (2) आउरपच्चक्खाण (आतुर प्रत्याख्यान (3) महापच्चक्खाण (महाप्रत्याख्यान) (4) भत्तपइण्ण (भक्तपरिज्ञा) (5) तंदुलवेयालिय (तंदुल-वैचारिक) (6) संथारक (संस्तारक) (7) गच्छाचार (गच्छाचार) (8) गणिविज्जा (गणिविद्या (9) देविंदथव (देवेन्द्रस्तव) और (10) मरणसमाहि (मरण समाधि)

(1) चतुःशरण → चतुःशरण में 63 गाथाएँ है। इसमें छह आवश्यको के निर्देश के अनन्तर अरहंत, सिद्ध, साधु और जिनधर्म इन चार को शरण मानकर पाप के प्रति निन्दा और पुण्य के प्रति अनुराग प्रकट किया गया है यह रचना वीरभद्रकृत मानी जाती है और इसपर भुवनतुंग की वृत्ति और गुणरत्न की अवचूरी भी है

(2) आतुर प्रत्याख्यान → आतुर प्रत्याख्यान में 70 गाथाएँ है। बालमरण और पण्डितमरण के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन किया गया है। प्रत्याख्यान → परित्याग को मोक्षप्राप्ति का साधन माना गया है। इसके रचयिता भी वीरभद्र है। इसमें पद्यों के अतिरिक्त कुछ अंश गद्य मे भी है।

Scanned with CamScanner

(3) महाप्रत्याख्यान → महाप्रत्याख्यान 142 अनुष्टुप पद्यों द्वारा दुश्चारित्र की निन्दा, सच्चरित्रात्मक भावनाओं व्रतों एवं आराधनाओं पर जोर दिया गया है। प्रत्याख्यान के परिपालन पर खूब जोर दिया गया है। यह रचना पूर्वोक्त आतुर प्रत्याख्यान का पूरक ही है।

(4) भक्तपरिज्ञा → भक्तपरिज्ञा 172 गाथाएँ में परलोक सिद्धि का निरूपण किया गया है। भक्त परिज्ञा, इंगिनी और पादोपगमन रूप मरण भेदों का स्वरूप बतलाया गया है। बन्ध मोक्ष का कारण मन ही है। अतः मन को वश करने के लिए अनेक दृष्टान्तों का प्रयोग किया गया है।

(5) तंदुलवैचारिक या वैकालिक → तंदुलवैचारिक या वैकालिक 586 गाथाओं में लिखी गयी गद्य-पद्य मिश्रित रचना है। इसमें गौतम और महावीर के बीच हुए प्रश्नोत्तर के रूप में जीव की गर्भावस्था, आहार-विधि बालजीवन क्रीड़ा आदि अवस्थाओं का वर्णन है। प्रसंगवश स्त्रियों के स्वरूप का विश्लेषण अनेक रूपकों द्वारा किया गया है। साधुओं को स्त्रियों से सर्वदा सावधान रहने के लिए चेतावनी दी गयी है।

(6) संस्तारक → संस्तारक में 123 गाथाएँ है। इसमें साधु के लिये अन्त समय में तृण का आसन-संथारा ग्रहण कर समाधिमरण धारण करने की विधि वर्णित है। मृत्यु के समय में स्थिर परिणाम रखकर पण्डितमरण द्वारा ही सद्गति प्राप्त की जा सकती है। इसमें अनेक मुनियों के दृष्टान्त दिये गये हैं जिनमें सुबन्धु और चाणक्य के उपसर्ग जय की प्रशंसा की गयी है।

(7) गच्छाचार → गच्छाचार में 137 गाथाएँ है। इसमें मुनि और आर्यिकाओं के गच्छ में रहने एवं तत्सम्बन्धी नियमों पालन की विधि बतलायी गयी है। इसमें -

निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थिनियों को एक दूसरे के प्रति सतर्क रहने तथा कामवासना से वश रखने का निरूपण किया गया है। मन के स्थिर रहने पर भी संयोगों से अपने को सर्वदा बचाना हितकर होता है। जो मुनि अपना संयम खो बैठते हैं, उनकी अवस्था उसी प्रकार की होती है, जिस प्रकार श्लेष्म में लिपटी मक्खी की। मुनि को बाल, वृद्धा, दुहिता, बहिन आदि के शरीर का भी स्पर्श नहीं करना चाहिए।

(8) गणिविद्या — गणिविद्या में 82 गाथाएँ हैं। दिवस, तिथि, नक्षत्र, करण, ग्रह, मुहूर्त, शकुन आदि का विचार किया गया है। ज्योतिष की दृष्टि से यह ग्रन्थ उपयोगी है।

(9) देवेन्द्रस्तव → देवेन्द्रस्तव में 307 गाथाएँ हैं। यहाँ कोई श्रावक चौबीस तीर्थंकरों की वन्दना कर स्तुति करता है। स्तुतिकार एक प्रश्न के उत्तर में कल्पों और कल्पातीत देवों का वर्णन करता है। इस ग्रन्थ के रचयिता भी वीरभद्र माने जाते हैं।

(10) मरणसमाधि → मरणसमाधि सबसे बड़ा प्रकीर्णक है। इसमें 663 गाथाएँ हैं। इसमें आराधना, आराधक, आलोचन, सल्लेखन, क्षमायापन आदि चौदह द्वारों से समाधिमरण की विधि बतलायी गयी है। बारह भावनाओं का भी निरूपण किया गया है। आचार्य के गुण, तप, एवं ज्ञान की महिमा भी इस ग्रन्थ में निरूपण किया गया है। धर्म का उपदेश देने एवं पादोपगमन आदि तप के द्वारा सिद्धगति प्राप्त करनेवाला दृष्टान्त का उल्लिखित है।